Postal Regn. - RTK/010/2020-22
RNI - HRHIN/2003/10425

ओ३म्

आर्य प्रतिनिधि

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का पाक्षिक मुखपत्र

मार्च 2020 (प्रथम)

Email : aryapsharyana@yahoo.in

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

Visit us : www.apsharyana.org

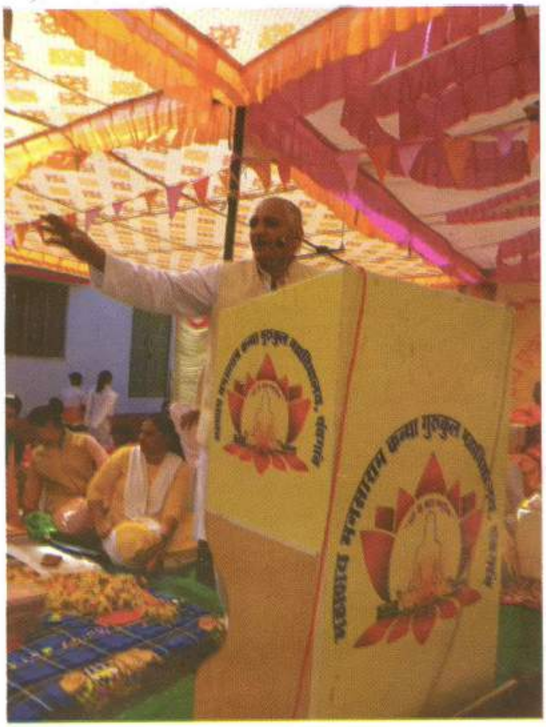

कन्या गुरुकुल पंचगांव के वार्षिक उत्सव में शिरकत करते हुए सभा प्रधान मा० रामपाल आर्य व सभामंत्री उमेद सिंह शर्मा।

सृष्टि संवत् 1,96,08,53,120
विक्रम संवत् 2076
दयानन्दाब्द 196

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा
की
मुख-पत्रिका

वर्ष 16 अंक 3

सम्पादक :
उमेद शर्मा

पत्रिका-शुल्क

देश में
वार्षिक-200 रुपये आजीवन-2000 रुपये

विदेश में
वार्षिक शुल्क 100 डॉलर
आजीवन 400 डॉलर

पत्रिका का स्वामित्व

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा (रजि०)
सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ,
गोहाना रोड, रोहतक-124001

सम्पादक-मण्डल

1. आचार्य सोमदेव
2. डॉ० जगदेव विद्यालंकार
3. श्री चन्द्रभान सैनी

सम्पादकीय विभाग

सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक
सम्पर्क सूत्र-
चलभाष :-
मो० 89013 87993

॥ ओ३म्॥

आध्यात्मिक, सामाजिक, राष्ट्रीय चिन्तन एवं वैदिक जीवन मूल्यों की पाक्षिक पत्रिका

आर्य प्रतिनिधि

मार्च, 2020 (प्रथम)

1 से 15 मार्च, 2020 तक

इस अंक में....

1. जिज्ञासा-विमर्श (कर्मकाण्ड) 2
2. मिलकर होली पर्व मनाओ 3
3. विदुर-नीति प्रश्नोत्तरी 4
4. वेदमार्ग ही सर्वश्रेष्ठ मार्ग है 5
5. कविता—पंडित लेखराम बलिदान दिवस 6
6. अन्तःकरण (मन) का सदुपयोग-3 7
7. ऋषिबोध की सार्थकता 9
8. ईश्वर की स्तुति एवं वैदिक धर्म 10
9. हे प्रभु, वर दो! 12
10. प्रेरक वचन 12
11. हम सुरक्षित हो सकते हैं यदि हम अपनी रक्षा के सभी संभव उपाय करें 13
12. समाचार-प्रभाग 15

आर्य प्रतिनिधि पाक्षिक पत्रिका के प्रसार में सहयोग दें

'आर्य प्रतिनिधि' पाक्षिक उलट-पलटकर रख देने लायक नहीं, बल्कि गंभीरतापूर्वक पढ़ने योग्य पत्रिका है। यदि आप इसके पाठक बनेंगे तो हमें विश्वास है कि पसन्द भी करेंगे और चाहेंगे कि इसे अन्य लोग भी पढ़ें। कृपया अपने जैसे गम्भीर पाठकों से 'आर्य प्रतिनिधि' पाक्षिक पत्रिका की चर्चा करें, उन्हें इसका ग्राहक बनने के लिए प्रेरित करके ऋषि ऋण से अनृण होवें।

'आर्य प्रतिनिधि' पाक्षिक का वार्षिक शुल्क 200/- रुपये एवं आजीवन शुल्क 2000/- रुपये है।

आप उपरोक्त राशि 'आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा' दयानन्दमठ रोहतक के नाम से बैंक ड्राफ्ट/मनीऑर्डर द्वारा भिजवाकर सदस्य बन सकते हैं।

—सम्पादक

जिज्ञासा-विमर्श (कर्मकाण्ड)

❑ आचार्य सोमदेव, मलार्ना चौड़, सवाईमाधोपुर (राज०)

गतांक से आगे...

जिज्ञासा-1. एक विद्वान् ने हवन कराते समय पञ्चमहायज्ञों की व्याख्या करते हुए कहा कि "स्तुति-प्रार्थना-उपासना मन्त्रों का पाठ जो हवन के आरम्भ में किया, वह 'ब्रह्मयज्ञ' बाकी का हवन 'देवयज्ञ' है।" क्या यह ठीक है? कृपया शंका का समाधान करें।

-ज्ञानप्रकाश कुकरेजा, 756/5, अर्बन स्टेट, करनाल (हरयाणा)

समाधान-महर्षि ने संस्कारविधि में पञ्चमहायज्ञों में अग्निहोत्र देवयज्ञ, ब्रह्मयज्ञ करने के बाद आचमन करके प्रारम्भ करने को लिखा है। वहाँ ये मन्त्र नहीं हैं, हो सकता है उस प्रकरण को लेकर उस विद्वान् ने ऐसा कहा हो। ऐसा कहने से कोई सैद्धान्तिक हानि भी नहीं दिख रही। हाँ, इससे ऐसा नहीं मानना चाहिए कि इन 8 मन्त्रों का पाठ ही ब्रह्मयज्ञ है, अपितु जो महर्षि ने सन्ध्योपासना के मन्त्र दिए हैं, वह ब्रह्मयज्ञ है। सन्ध्योपासना के मन्त्रों के साथ ये 8 मन्त्र बोलकर इनके सहित किये गये यज्ञ को ब्रह्मयज्ञ कहा जा सकता है। संस्कार विशेष और प्रत्येक मांगलिक कार्य में ईश्वर की स्तुति-प्रार्थना-उपासना करनी ही चाहिए, करनी ही होती है।

जिज्ञासा-2. मुझे परोपकारी पत्रिका वर्षों से मिल रही है। मैं परोपकारिणी सभा का आभारी हूँ। विद्वद्गोष्ठी का कार्य सराहनीय है। कर्मकाण्ड में एकरूपता लाने के लिए सराहनीय कार्य हो रहा है। मुझे कुछ सन्देह है। कृपया, उन्हें दूर कीजिए। विवाह संस्कार में जो चार परिक्रमाएँ हैं, उनमें कौन आगे चलता है-वर या वधू? कृपया, प्रमाण देकर बताइये। दूसरा प्रश्न है कि मॉरीशस में अन्त्येष्टि संस्कार के बाद मृतक के घर तीन दिन लगातार यज्ञ होता है, फिर दसवें दिन, चालीसवें दिन और एक वर्ष के बाद। कुछ लोगों की ऐसी धारणा है कि ये सारे कार्य मंगल कार्य नहीं हैं, अतः अष्टाज्याहुति के मन्त्रों से आहुतियाँ नहीं देनी चाहिए। क्या है मंगल कार्य? क्या अमंगल कार्य? स्पष्ट कीजिए। **-पण्डित धर्मेन्द्र, पीचप, मॉरीशस**

समाधान-विवाह संस्कार में जो चार परिक्रमाएँ हैं, उनमें वर ही आगे चलता है और वधू वर के पीछे चलती है। इस विषय में संस्कारविधि में स्पष्ट प्रमाण है-

(क) पाणिग्रहण के मन्त्रों के बाद महर्षि लिखते हैं, "इन पाणिग्रहण के छः मन्त्रों को बोल के, पश्चात् वर, वधू की हस्ताञ्जली पकड़ के उठावे और उसको साथ लेके...यज्ञकुण्ड की प्रदक्षिणा करके....।" यहाँ महर्षि के वचनों से स्पष्ट है कि वर, वधू की हस्ताञ्जली पकड़कर उठाता है और उसको साथ ले (वधू को साथ ले) प्रदक्षिणा करता है, अर्थात् प्रदक्षिणा करते हुए वर आगे-आगे चलता है और वधू, वर के पीछे-पीछे चलती है।

(ख) लाजा होम के तीन मन्त्रों से धाणी की आहुति के बाद-**ओं सरस्वति प्रेदमव... स्त्रीणामुत्तमं यशः ॥** इस मन्त्र के बाद संस्कार विधि में लिखा है, "इन मन्त्रों को बोल के अपने जमणे हाथ की हस्ताञ्जली से वधू की हस्ताञ्जली पकड़ के, वर-**ओं तुभ्यमग्रे... अग्ने प्रजया सह ॥ 1 ॥ ओं कन्यला पितृभ्य... इवातिगाहेमहि द्विषः ॥ 2 ॥** इन मन्त्रों को पढ़ यज्ञ कुण्ड की प्रदक्षिणा करके...।" यहाँ भी वर, वधू की हस्ताञ्जली पकड़कर दो मन्त्र बोल प्रदक्षिणा करता है और वधू पीछे रहती हुई चलती है।

वैदिक विवाह संस्कार में तो प्रदक्षिणा करते हुए सर्वत्र वर ही आगे रहता है। पौराणिक संस्कार कराते हुए वधू को भी आगे रख प्रदक्षिणा कराते हैं।

2. अन्त्येष्टि संस्कार के बाद मृतक के घर तीन दिन लगातार यज्ञ होता है और बाद में भी दिन विशेष में यज्ञ करते हैं-यह बात अच्छी है। आपका कहना है कि वहाँ (मॉरीशस में) कुछ लोगों की धारणा है कि इस प्रकार के यज्ञ इन दिनों में करना-कराना मंगल कार्य नहीं है, इसलिए अष्टाज्याहुति के मन्त्रों से आहुति नहीं देनी चाहिए। अब यहाँ विचार करें कि वह दिन मंगलकारी नहीं है या यज्ञकर्म मंगल कार्य नहीं है? परमेश्वर के बनाए सब दिन ही एक जैसे हैं, दिनों में अपनी मंगलता-अमंगलता कुछ भी नहीं

है, इसलिए किसी दिन विशेष को मंगल या अमंगल कहना ठीक नहीं। अब यज्ञकर्म देखें तो पता चलता है कि यज्ञकर्म तो मंगल कार्य ही है, वह अमंगल कभी होता ही नहीं है। जब ऐसी बात है तो इसको अमंगल कार्य मान अष्टाज्याहुति के मन्त्रों से आहुति न देना ठीक नहीं है।

यज्ञ में ईश्वर स्तुति-प्रार्थना-उपासना से लेकर यज्ञ पूर्ण आहुति तक सभी मंत्र मंगलकारी ही हैं, अर्थात् विशेष अर्थ उन मंत्रों के हैं, जिनसे हमारा जीवन कल्याण की ओर अग्रसर होता है। जब यज्ञ कर्म मंगल कार्य ही है, तब उसको अमंगल कहकर अष्टाज्याहुति मन्त्रों से आहुति न देना उचित नहीं है और आपके अनुसार यह धारणा भी कुछ लोगों की है जो गलत हो सकती है। हाँ, जहाँ महर्षि ने जिन संस्कार विशेषों में इन मंत्रों का विधान नहीं किया, वहाँ इनसे आहुति नहीं देनी चाहिए।

जिज्ञासा-3. बचपन से मेरा सम्बन्ध आर्यसमाज से रहा है। अभी भी है। महर्षि दयानन्द के भक्त हैं। उनका वेद, उनके ग्रन्थ, आर्यसमाज और यज्ञ-हवन से जुड़े हुए हैं। स्मरण आता है-पण्डित जी के अलावा यजमान लोग भी धोती-कुर्ता पहनकर ही यज्ञ में आहुति देते थे। जो धोती पहनकर नहीं आ सकता था, वह कागज में धोती लपेटकर आता था और बैठक के एक कोने में धोती धारण कर लेता था। बिना धोती के कोई हवन में नहीं बैठता था, मगर वर्तमान में नवयुवक समाजीजन धोती-कुर्ता पहनने से कुछ कतराते हैं।

पतलून-कमीज धारण करके ही बैठ जाते हैं। ज्यादा से ज्यादा कुर्ता धारण कर लेते हैं, जैसे कि भारती पत्र-पत्रिकाओं में यजमानों के यज्ञ में भाग लेते हुए चित्र छपते हैं। महिलाओं को तो कुछ कहना ही नहीं है। साड़ी में ही आती हैं और भाग लेती हैं। तो चित्रों में क्या देखते हैं कि यजमानगण कोट-पतलून और टाई लगाए बैठे हैं आहुति देते हैं, यह कहाँ तक सही है? क्योंकि टाई तो क्रिश्चियनों के क्रॉस का प्रतीक है, यह पढ़ने को मिला है। यह कहाँ तक सही हो रहा है? यज्ञ का महत्त्व क्या रह गया है? कहाँ तक सही है यह? उसका समाधान आप देंगे।

-सोनालाल नेमधारी, कारोलिन, वेलप्रट, मॉरीशस

क्रमशः अगले अंक में...

मिलकर होली पर्व मनाओ

सकल विश्व के सब नर-नारी, मिलकर होली पर्व मनाओ।
प्यार-प्रेम का रंग बरसाओ, पावन वैदिक धर्म निभाओ ॥ टेक ॥
फाल्गुन मास पूर्णिमा के दिन, यह त्यौहार मनाते हैं सब।
हलवा, पूरी, खीर, पकौड़े, बड़े चाव से खाते हैं सब।
नीला, पीला, हरा, गुलाबी, लाल रंग बरसाते हैं सब।
ईश्वर भक्त सदाचारी, सत्कर्मी मौज उड़ाते हैं सब।
नशेबाज हैं जो नर-नारी, उनके सब दुर्व्यसन छुड़ाओ।
प्यार-प्रेम का रंग बरसाओ, पावन वैदिक धर्म निभाओ ॥ 1 ॥
याद रखो अय दुनिया वालो, नवसस्येष्टि यज्ञ है होली।
आर्य पर्व है वेद पढ़ो तुम, करो न गन्दी कभी ढिढोली।
बातों में मिश्री-सी घोलो, सबसे बोलो मीठी बोली।
दान करो, दानी बन जाओ, युवक-युवतियों की सब टोली।
दुखियों, दीन-अनाथ जनों को, खुश हो करके गले लगाओ।
प्यार-प्रेम का रंग बरसाओ, पावन वैदिक धर्म निभाओ ॥ 2 ॥
चोरी करना, जुआ खेलना, बुरे काम माने जाते हैं।
मांसाहारी, दुष्ट शराबी, कहीं नहीं आदर पाते हैं।
धर्मद्रोही, धूर्त, नास्तिक, नफ़रत से देखे जाते हैं।
चरित्रहीन, व्यभिचारी गुण्डे, मार सदा जग में खाते हैं।
जो वैदिक पथ भूल गये हैं, उनको वैदिक मार्ग बताओ।
प्यार-प्रेम का रंग बरसाओ, पावन वैदिक धर्म निभाओ ॥ 3 ॥
जगतपिता जगदीश्वर का, अहसान भुलाना महापाप है।
अच्छी संगत तज, गन्दी संगत, अपनाना महापाप है।
ईश्वर भक्तों, विद्वानों की, हँसी उड़ाना महापाप है।
परधन, परनारी पर सुन लो, कुदृष्टि लगाना महापाप है।
त्यागी सन्त तपस्वी हैं जो, उनको खुश हो शीश नवाओ।
प्यार-प्रेम का रंग बरसाओ, पावन वैदिक धर्म निभाओ ॥ 4 ॥
अण्डे, मछली, मुर्गा, तीतर, बकरा खाना महापाप है।
मानवता के हत्यारों का, साथ निभाना महापाप है।
श्रीकृष्ण जैसे योगी को, दोष लगाना महापाप है।
गोपी वल्लभ, राधा प्रेमी, चोर बताना महापाप है।
ढोंगी, पाखण्डी गुण्डों की, पोल खोल दो आगे आओ।
प्यार-प्रेम का रंग बरसाओ, पावन वैदिक धर्म निभाओ ॥ 5 ॥
परोपकारी बनो साथियो!, मानव हो मानवता धारो।
निद्रा त्यागो होश संभालो, राम-कृष्ण के पुत्र दुलारो।
आए हो किसलिए जगत में, बैठ तनिक एकांत विचारो।
अगर मारना है तुमको तो, बुरी भावनाओं को मारो।
नन्दलाल 'निर्भय' दुनिया में अपना नाम अमर कर जाओ।
प्यार-प्रेम का रंग बरसाओ, पावन वैदिक धर्म निभाओ ॥ 6 ॥

-पं० नन्दलाल निर्भय पत्रकार, भजनोपदेशक, आर्यसदन
बहीन, जनपद पलवल (हरयाणा) मो० 9813845774

विदुर-नीति प्रश्नोत्तरी

❑ कन्हैयालाल आर्य, उपप्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, रोहतक

गतांक से आगे....

निम्नलिखित 4 श्लोकों को स्वामी जगदीश्वरानन्द सरस्वती जी ने प्रक्षिप्त माना है। परन्तु आचार्य युधिष्ठिर मीमांसक जी ने इन चार श्लोकों को विदुर-नीति का भाग मानते हुए इन्हें अपनी पुस्तक विदुर-नीति में दिया है। अतः इन्हें यहाँ दिया जा रहा है।

विदुर उवाच

16. राजा लक्ष्मणसम्पन्नस्त्रैलोक्यस्याधिपो भवेत्।
प्रेष्यस्ते प्रेषितश्चैव धृतराष्ट्र युधिष्ठिरः॥

शब्दार्थः-विदुर बोले (राजा) राजा (लक्षणसम्पन्न) लक्षणों से युक्त (त्रैलोक्यस्य) तीनों लोकों का (अधिपः) स्वामी (भवेत्) हो [ऐसा] (प्रेष्यः) विशेषरूप से चाहने योग्य (ते) तुम्हारा/तुम्हारे द्वारा (प्रेषितः) [वन को] भेजा गया है। (च) और (एव) ही (धृतराष्ट्र) हे धृतराष्ट्र! (युधिष्ठिरः) युधिष्ठिर।

17. विपरीततरश्च त्वं भागधेये न सम्मतः
अर्चिषां प्रक्षयाच्चैव धर्मात्मा धर्मकोविदः॥

शब्दार्थ-(विपरीततरः) अधिक उलटे [राज्यलक्षणों से हीन] (च) और (त्वम्) तुम (भागधेये) [राज्यरूपी] भाग में (नः) नहीं (सम्मतः) माने गये हो। (अर्चिषाम्) [नेत्र] रश्मियों के (प्रक्षयात्) पूरी तरह नष्ट हो जाने से (च) और (एव) ही (धर्मात्मा) धर्मशील (धर्मकोविदः) धर्म को जानने वाले।

18. आनृशंस्यादनुक्रोशात् धर्मात् सत्यात् पराक्रमात्।
गुरुत्वात् त्वयि संप्रेक्ष्य बहून् क्लेशशांस्तितिक्षते॥

शब्दार्थ-(आनृशंस्यात्) क्रूर स्वभाव न होने से (अनुक्रोशात्) दयालु होने से (धर्मात्) धर्मात्मा होने से (सत्यात्) सत्यवादी होने से (पराक्रमात्) पराक्रमी होने से (गुरुत्वात्) गौरव के कारण से (त्वयि) तुम्हारे विषय में (संप्रेक्ष्य) देखकर [विचारकर] (बहून्) बहुत (क्लेशान्) क्लेशों को (तितिक्षते) सहन करता है [युधिष्ठिर]।

19. दुर्योधने सौबले च कर्णे दुःशासने तथा।
एतेष्वैश्वर्यमाधाय कथं त्वं भूतिमिच्छसि॥

शब्दार्थ-(दुर्योधने) दुर्योधन में (सौबले) सुबल के पुत्र (शकुनि) में। (च) और (कर्णे) और कर्ण में, (दुःशासने) दुःशासन में (तथा) और (एतेषु) उक्त पुरुषों के आश्रय में (ऐश्वर्यम्) राज्य को (आधाय) रखकर (कथम्) कैसे (त्वम्) तुम (भूतिम्) कल्याण को (इच्छसि) चाहते हो।

पण्डितों के लक्षण

20. आत्मज्ञानं समारम्भस्तितिक्षा धर्मनियन्ता।
यमर्था नापकर्षन्ति स वै पण्डित उच्यते॥

शब्दार्थ-विदुरजी बोले-(आत्मज्ञानम्) अपने सामर्थ्य या शब्द का परिज्ञान, (समारम्भः) अपनी शक्ति के अनुसार उद्वेग से कार्यारम्भ करना, (तितिक्षा) कष्ट-सहनशीलता, (धर्मनियन्ता) धर्म में स्थिर रहना-ये गुण जिसमें हों और (यम्) जिसको (अर्थाः) सांसारिक विषय-वासनाएँ या धन (न अपकर्षन्ति) अपनी ओर आकृष्ट नहीं करती हैं (वै) निश्चय ही (सः) वह (पण्डितः) पण्डित (उच्यते) कहा जाता है।

21. निषेवते प्रशस्तानि निन्दितानि न सेवते।
अनास्तिकः श्रद्दधान एतत्पण्डितलक्षणम्॥

शब्दार्थ-जो (प्रशस्तानि) उत्तम कर्मों का (निषवते) सेवन करता है, (निन्दितानि) निन्दित कर्मों को (न सेवते) नहीं करता, (अनास्तिकः) जो आस्तिक है, (श्रद्दधानः) श्रद्धावान् है-(एतत्) यह सब (पण्डित-लक्षणम्) पण्डित का लक्षण है।

22. क्रोधो हर्षश्च दर्पश्च ह्रीस्तम्भो मान्यमानिता।
यमर्थान्नापकर्षन्ति स वै पण्डित उच्यते॥

शब्दार्थ-(क्रोध) क्रोध (च) और (हर्षः) प्रसन्नता, (दर्पः) अभिमान (च) और (ह्रीः) लज्जा, (स्तम्भ) धृष्टता, (मान्यमानिता) मनमानी की प्रवृत्ति-ये दोष (यम्) जिस मनुष्य को (अर्थात्) प्रयोजन [जीवनोद्देश्य] से (न अपकर्षन्ति) परे नहीं खींच ले-जाते (वै) निश्चय से (सः) वह (पण्डितः) पण्डित (उच्यते) कहाता है।

क्रमशः अगले अंक में....

वेदमार्ग ही सर्वश्रेष्ठ मार्ग है

❑ डॉ० रवीन्द्र कुमार शास्त्री 'सोम', गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ, फरीदाबाद मो० 8700640736

गतांक से आगे....

मनुष्य अपने शुभकर्मों के द्वारा प्रभु की भक्ति से मोक्षरूपी नभ को छू सकते हैं। जो मनुष्य खाना, पीना, सोना, भोग-विलास को ही अपने जीवन का वास्तविक लक्ष्य समझते हैं तो समझो ये अपने जीवन के साथ धोखा कर रहे हैं और ऐसे मनुष्य इन्हीं उलझनों में फँसकर अपने जीवन के वास्तविक लक्ष्य को भूल जाते हैं और परजन्म की तैयारी कुछ नहीं कर पाते।

मनुष्य के जीवन को चार भागों में बांटा गया है-(1) ब्रह्मचर्याश्रम, (2) गृहस्थाश्रम, (3) वानप्रस्थश्रम, (4) संन्यासाश्रम।

पहला आश्रम ब्रह्मचर्य आश्रम है। इसमें ब्रह्मचारी या विद्यार्थी अपने ब्रह्मचर्य की रक्षा करते हुये गुरुकुलों में, विद्यालयों एवं महाविद्यालयों में अध्ययन करते हैं और जब सम्पूर्ण शास्त्रों में पारंगत हो जाते हैं तब ब्रह्मचारी या विद्यार्थी गृहस्थाश्रम में प्रविष्ट हो जाते हैं।

दूसरा आश्रम है गृहस्थाश्रम। इसमें गृहस्थी लोग पचास वर्षों तक गृहस्थाश्रम की पूर्ण जिम्मेदारी को निभाकर पचास वर्ष के बाद घर की पूरी जिम्मेदारी सौंपकर वन में प्रस्थान करते हैं और मोक्ष की प्राप्ति के लिए प्रभु का ध्यान लगाते हैं।

तीसरा आश्रम है वानप्रस्थाश्रम। पचास से पचहत्तर वर्ष तक वानप्रस्थी वन में रहकर प्रभु का ध्यान करते थे उसका ही भजन करते थे और मोक्ष की प्राप्ति में लग जाते थे।

चौथा आश्रम है संन्यासाश्रम। इस आश्रम में संन्यासी लोग पचहत्तर वर्ष से लेकर सौ वर्ष तक वेदों का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना, ऐसा पुनीत कार्य करते हैं। गांव-गांव जाकर धर्मोपदेश करते थे और ज्ञान की बातें बताते थे जिससे मानव जाति का कल्याण हो। वेदों का कथन है कि मनुष्य का शरीर मिलने का मतलब है कि मोक्ष प्राप्त करना। जो मनुष्य मोक्ष प्राप्त नहीं करता है, संसार में उसका आना व्यर्थ हो जाता है। वह अनेक जन्मों तक भटकता है और फिर शुभकर्मों के आधार पर उसे मानव शरीर का मिलता है। मनुष्य मोक्ष प्राप्त इसलिए करना चाहता है कि जिससे वह बार-बार आवागमन के बंधनों से मुक्त हो जाये। जब मनुष्य मोक्ष प्राप्त कर लेता है तब वह खरबों, नीलों वर्षों तक आवागमन के बन्धनों से मुक्त हो जाता है और विशेष परिस्थितियों में मानव जाति के लिये कल्याणार्थ यह मुक्तात्मा पुनः भूलोक पर जन्म लेकर मानव जाति का उद्धार करता है।

वेदों एवं दर्शनों का भी कथन है कि मनुष्य का अन्तिम लक्ष्य मोक्ष है। जो मनुष्य मोक्षपद से वंचित रह जाते हैं वह बाद में पछताता है। योगदर्शन के अनुसार हमें अपने जीवन को पवित्र बनाना चाहिये। योग के आठ अंग होते हैं-यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, ध्यान, धारणा व समाधि। जो मनुष्य परमेश्वर की उपासना करके अज्ञानता, अविद्या और दुःखों से छूटकर सत्य और धर्म का पालन करता है। वह आत्मिक उन्नति करके मुक्ति को प्राप्त करता है। स्वामी दयानन्द सरस्वती ने आर्यसमाज के छठे नियम में लिखा है-"संसार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है। अर्थात् शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना।" स्वामी दयानन्द का मन्तव्य है कि जो व्यक्ति समाज, राष्ट्र एवं विश्व का कल्याण करना चाहता है तो उस व्यक्ति के लिए शारीरिक एवं आत्मिक उन्नति अत्यावश्यक है। तभी वह समाज को आगे बढ़ाने में सक्षम हो सकता है। आत्मिक उन्नति के द्वारा ही मनुष्य मोक्ष पद पाने की कल्पना कर सकता है। वेद का मंत्र है-

ओ३म् य आत्मदा बलदा यस्य विश्व उपासते प्रशिषं यस्य देवाः। यस्य छायाऽमृतं यस्य मृत्युः कस्मै देवाय हविषा विधेम॥ हे दयालु परमेश्वर! आप हमें सत्य विद्या प्रदान करके हम पर उपकार करे, क्योंकि आप हमारे शारीरिक एवं आत्मिक बल के स्रोत हैं। आप हमारे एकमात्र उपास्यदेव हैं। हम निष्ठापूर्वक आपके आदेशों का पालन करते हैं। जो लोग आपकी कृपापूर्ण छाया का सहारा लेते हैं वे चरम ध्येय मोक्षपद को प्राप्त करते हैं, परन्तु जो लोग आपकी अनुकम्पा प्राप्त करने का सौभाग्य नहीं पाते, वे जन्म-मरण के दुःखों को भोगते रहते हैं।

योगदर्शन के अनुसार मोक्ष प्राप्ति में पांच प्रकार के दु:खों को समाप्त करने के पश्चात् ही मनुष्य मोक्षपद प्राप्त कर सकता है। ये दु:ख इस प्रकार हैं–अविद्या, अस्मिता, राग, द्वेष और अभिनिवेश। इनसे छुटकारा पाये बिना मोक्ष नहीं मिल सकता अर्थात् मुक्ति नहीं मिल सकती। इसके अतिरिक्त दु:ख में सुख यानि विषय, तृष्णा, काम, क्रोध, लोभ, मोह, ईर्ष्या, शोक और द्वेष आदि दु:खरूप व्यवहार में सुख की आशा करना, ब्रह्मचर्य, निष्काम, शम, सन्तोष, विवेक, प्रसन्नता, प्रेम अथवा मित्रता आदि को दु:ख मानना भी शास्त्रों में अविद्या माना गया है। इसमें मनुष्य परिवार एवं सम्मान को ही जीवन का लक्ष्य मानने लगता है। इसमें सदाचार की भावना, परोपकार, मनुष्यता, उदारता और तितिक्षा सहने की शक्ति समाप्त हो जाती है।

ईश कृपा न प्राप्त होने का यह भी एक महत्त्वपूर्ण कारण है। वेदों में मोक्ष का मतलब आत्मा का परमात्मा में विलीन होना बताया गया है। यानी आवागमन के बन्धनों से जीव को छुटकारा मिलना मुक्ति है अर्थात् मोक्ष है। न्यायशास्त्र के अनुसार जब अविद्या का नाश हो जाता है तब जीव के सारे दोष नष्ट हो जाते हैं। इससे अधर्म, अन्याय विषयों के प्रति लगाव तथा अन्य वासनायें समाप्त हो जाती हैं। इनके नष्ट होने से पुन: जन्म नहीं होता। इससे दु:खों का अभाव हो जाता है। दु:खों के अभाव होने से जीवात्मा परमात्मा यानी मोक्ष को प्राप्त हो जाता है।

स्वामी दयानन्द ने दुनिया के लोगों से यही कहा था कि जो मनुष्य अपने जीवन को सुख-शान्ति से व्यतीत करना चाहते हैं और दु:खों से छूटकर परमानन्दरूपी सागर में निमग्न रहना चाहते हैं तो ऐसे लोग हमारे देश के ऋषि-मुनियों, महर्षियों एवं विद्वानों ने जो मार्ग अपनाये हैं, उन मार्गों पर चलें तभी मनुष्य जाति का कल्याण संभव है। हमारे राष्ट्र के ऋषि-मुनियों, महर्षियों एवं विद्वानों ने वेदों के मार्गों का ही अनुसरण किया था। अत: हमें भी वेदों के मार्गों का अनुसरण करना चाहिये। तभी हम मोक्ष की कल्पना कर सकते हैं और स्वामी दयानन्द जी के सपनों को साकार कर सकते हैं, क्योंकि वेदों के मार्गों पर चलने से ही मानव जाति का कल्याण, उत्थान एवं सुधार संभव है। इसलिये मानव जाति के कल्याणार्थ केवल वेदमार्ग ही सर्वश्रेष्ठ मार्ग है, अन्य कोई मार्ग नहीं।

6 मार्च 1897—पंडित लेखराम बलिदान दिवस

हे आर्य मुसाफिर लेखराम! हों तुम्हें निवेदित कोटि प्रणाम।
धर्म ध्वजा के हे उन्नायक! याद करें तेरा बलिदान॥
जन्म का जिला झेलम था, तारीख अठारह सौ अठावन।
भागभरी थी माता तेरी, तारासिंह का कुल था पावन॥
उर्दू गणित इतिहास फारसी, सब विषयों पर था अधिकार।
पाया था बचपन से तुमने, मेधा का अनुपम उपहार॥
सत्रह साल की उम्र हुई जब, पुलिस विभाग में काम मिला।
लेकिन धर्म-पिपासु जन के, मन को ना आराम मिला॥
सत्य-धर्म की खोज निरंतर, रखी थी तुमने जारी।
दयानद का पता मिल गया, भव-भय-भंजक भ्रमहारी॥
संशय सकल निवारण हेतु, ऋषि-चरणों में पहुंच गया।
तारीख अठारह सौ इक्यासी, गुरु-शिष्य का मिलन भया॥
दर्शन पा तृप्त हुई आंखें, मन तृप्त हुआ संवादों से।
वेदों का मर्म समझ आया, मुक्ति मिल गई विषादों से॥
जीवन का लक्ष्य स्पष्ट हुआ, दुविधा का बादल नष्ट हुआ।
गुरु के पदचिह्न नज़र आए, ऋषियों की धुन में मस्त हुआ॥
वेद-धर्म की करूंगा रक्षा, आर्य-पथिक बन विचरूँगा।
दयानन्द का सैनिक हूं, ना सच कहने से हिचकूँगा॥
ऋषि जीवन की विषय सामग्री, खोजी जाकर नगर-नगर।
आर्यमुसाफिर नाम रख लिया, डोला करता डगर-डगर॥
अद्भुत भाषण लेखन अमोघ, तप-त्याग-परिश्रम का संयोग।
कर्तव्य मार्ग पर डटा था ऐसे, डिगा सके ना मोह-शोक॥
अकाट्य-युक्तियां पुष्ट-प्रमाण, लेखराम की थी पहचान।
मुँह की खाकर गिरे विधर्मी, जब छेड़ा शुद्धि अभियान॥
इस्लाम ईसाइयत के आगे, बनकर चट्टान खड़े थे तुम।
शिखा- सूत्र की रक्षा हेतु, बनकर हनुमान अड़े थे तुम॥
मिर्जा गुलाम अहमद कादयानी, कर दिया तुमने पानी-पानी।
दयानन्द की राह चल पड़े, प्राणों की परवाह न मानी॥
नाटा, काला एक मुसलमां, शुद्धि के बहाने आया था।
लेखराम के पेट में उसने, धोखे से छुरा घुमाया था॥
उनतालीस की अल्प आयु में, गौरवमय बलिदान हुआ।
लाहौर की धरती चिल्लाई, शोकाकुल हिंदुस्तान हुआ॥
बंद न हो तहरीर (लेखन) कभी, अंतिम इच्छा जतलाई थी।
मृत्युशैया से लेखराम ने, हमको आवाज़ लगाई थी॥
शीश तली पर धरकर जिसने, वैदिकपथ का मान बढ़ाया।
काश! हमारे ऊपर पड़ती, लेखराम की निर्भय छाया॥

–अंकुर 'आनंद' 1591/21, आदर्श नगर, रोहतक-124001

अन्तःकरण (मन) का सदुपयोग-3

❑ महात्मा चैतन्यमुनि, महादेव, तहसील सुन्दरनगर, जिला मण्डी (हि०प्र०) 175018 मो० 09418053092

आकूतिं देवीं सुभगां पुरो दधे चित्तस्य माता सुहवा नो अस्तु।
यामाशामेमि केवली सा मे अस्तु विदेयमेनां मनसि प्रविष्टाम्॥ (अ० 19-4-2)

(देवीम्) दिव्यगुणों वाली (सुभगाम्) तथा उत्तम भग को पैदा करने वाली (आकूतिम्) संकल्प-शक्ति को (पुरः) आगे (दधे) मैं धरता हूँ, (चित्तस्य) चित्त की (माता) माता अर्थात् जननी-रूप वह संकल्प-शक्ति (नः) हमारे लिए (सुहवा) सहज में बुलाने योग्य (अस्तु) होवे। (याम्) जिस (आशाम्) कामना को (एमि) मैं प्राप्त होऊँ (सा) वह (मे) मेरी कामना (केवली) केवल अर्थात् अकेली हो....संकीर्ण न हो, (मनसि) मन में (प्रविष्टाम्) प्रविष्ट हुई (एनाम्) इस संकल्प-शक्ति को (विदेयम्) मैं पाऊँ।

मह्यं यजन्तां मम यानीष्टाकूतिः सत्या मनसो मे अस्तु। एनो मा निगां कतमच्चनाहं विश्वे देवा अभिरक्षन्तु मेह॥ (अ० 5-3-4)

(मम) मेरे (यानि) जो (इष्टा) किए हुए देवपूजन, सत्संग और दान हैं वे (मह्यम्) मुझे (यजन्ताम्) प्राप्त रहें, (मे) मरे (मनसः) मन का (आकूतिः) संकल्प (सत्या) सत्य (अस्तु) हो। (अहम्) मैं (कतमत्) किसी (चन) भी (एनः) पाप को (मा) न (निगाम्) प्राप्त होऊँ, (इह) इस विषय में (विश्वे) सब (देवाः) देव (मा) मेरी (अभिरक्षन्तु) पूर्ण रक्षा करें।

मन्त्रों में मुख्यतः कहा गया है कि हमारे संकल्प सत्य हों और फिर मन को संयमित करके हम उन संकल्पों को पूर्णता प्रदान करें। यजुर्वेद के चौतीसवें अध्याय के छः मन्त्रों में मन को शिव-संकल्प वाला बनाने की बात कही गई है। स्मरण रहे कि हम अपने मन को कोई विकल्प न दें बल्कि उसे संकल्पित ही बनाएं मगर वे संकल्प भी सत्यम्, शिवम् और सुन्दरम् हों.... जीवन का मुख्य लक्ष्य पुण्य कमाना और प्रभु का सान्निध्य प्राप्त करना बनाना चाहिए और फिर इस संकल्प को पूरा करने के लिए मन को साधना चाहिए....यह मन हमें कभी लोकैषणा में, कभी पुत्रैषणा में तो कभी वित्तैषणा में निरन्तर भटकाता रहता है और हम इन ऐषणाओं का एक हिस्सा बनकर ही अपना सारा जीवन बर्बाद कर देते हैं। व्यक्ति की समस्त ऐषणाएं पूर्ण हो जाएं यह असंभव है मगर व्यक्ति फिर भी इन ऐषणाओं की पूर्ति के प्रयास में ही लगा रहता है।ये ऐषणाएं ही हमारी अतृप्ति का कारण हैं। तृप्ति ऐषणाओं में डूबकर नहीं बल्कि इनसे उपराम होकर ही मिल सकती है। यदि हम निरन्तर ऐषणाओं के पीछे भागते रहे और इन ऐषणाओं का ही हिस्सा बन जाएं तो सुख और तृप्ति की कामना करना बेमानी है। समझ लें कि ये दोनों एक दम विपरीत दिशाएं हैं जो कभी भी आपस में मिलने वाली नहीं हैं। ये तो हमें सदा भिखारी ही बनाए रखती हैं। भिखारी होना ही सबसे बड़ी दासता का प्रतीक है। स्वामी बनना है तो इन ऐषणाओं से हटकर दूसरा मार्ग अपनाना होगा। आचार्य शंकर जी से पूछा गया-**जगत् केन जितम्?** आचार्य जी का सीधा-सा उत्तर था-**एन मनो जितम्।** अर्थात् सांसार को कौन जीत सकता है? उत्तर दिया कि जिसने अपने मन को जीत लिया है, वही संसार को जीत सकता है। जिसने मन को जीत लिया वह तो मानों सम्राट बन गया।

स्वामी रामतीर्थ जी बहुत अच्छे चिन्तक और साधक हुए हैं। जब ये अमेरिका गए तो वहां पर उनके प्रवचनों का लोगों पर बहुत अधिक प्रभाव पड़ा। लोग उन्हें सुनने के लिए भारी संख्या में उपस्थित होते थे। एक दिन स्वामी जी ने अपने प्रवचन के बाद घोषणा कि कल वे कुछ ही सैकिण्ड का मगर बहुत ही महत्त्वपूर्ण प्रवचन करेंगे। लोगों ने जब उनकी यह घोषणा सुनी तो सभी को बड़ी उत्सुकता हुई कि आखिर वह उपदेश क्या होगा। अगले दिन उनके कुछ सैकिण्डों के उपदेश को सुनने के लिए भारी संख्या में लोग उपस्थित हो गए। जब सभी श्रोता उनके प्रवचन को सुनने के लिए बहुत लालायित हो

गए तो स्वामी जी ने एक मुण्डेर पर खड़े होकर अपना वह उपदेश इस प्रकार से दिया-मन जीते जग जीत। मन हमें अमरत्व भी दिला सकता है और मृत्यु भी....यह सारथि है मगर इस सारथि को शिवसंकल्पी बनाने की जरूरत है, क्योंकि जैसा यह सारथि होगा वैसी ही हमार संकल्प होगा और वैसी उपलब्धि भी होगी। इसकी वृत्तियों को दिशा देने की जरूरत है। मन को साधने के लिए जप और ध्यान की तकनीक बहुत ही उपयोगी है। जप के द्वारा मन को एक स्थान पर टिकाने का प्रयास किया जाता है। मन एक बन्दर की तरह चंचल है तो उसे कोई काम देना होगा ताकि वह उसी काम में लगा रहे। इसके लिए जप का अभ्यास करना अपेक्षित है। जप करने के लिए ओम् शब्द बहुत ही उपयोगी है। समस्त सन्तों और ग्रन्थों ने इसे ही जपने की प्रेरणा दी है। वेद, उपनिषद्, मनुस्मृति, दर्शन ग्रन्थ, गीता, सत्यार्थप्रकाश आदि ग्रन्थों में इस ओम् की सर्वश्रेष्ठता का वर्णन किया गया है। दर्शनकार का कथन है-**तस्य वाचकः प्रणवः।** (यो०द० 1-27) उस प्रभु के ओम् नाम का जप भावना और चिन्तन के साथ करना चाहिए। योगदर्शन में ही आगे कहा गया है-**तज्जपस्तर्थभावनम्।** (1-28) अर्थात् जिस शब्द या मन्त्र का हम जप कर रहे हैं उसकी भावना को चिन्तन के स्तर पर ढालना होगा अन्यथा जप का अपेक्षित लाभ नहीं हो सकेगा। जप मन को स्थिर करने की तकनीक है इसलिए यदि चिन्तन के स्तर पर मन को किसी एक स्थान पर टिकाने का प्रयास नहीं किया तो जप की समूची प्रक्रिया ही बेकार हो जाएगी। यदि ऐसा नहीं करेंगे तो वही स्थिति होगी जिसके बारे में कबीर जी ने कहा है-

माला तो कर में फिरे जिह्वा फिरे मुख मांहि।
मनवा तो चहुं दिशि फिरे यह तो सुमरिन नांहि॥

यदि अर्थ चिन्तन पर ध्यान नहीं दिया गया तो जप की सार्थकता ही समाप्त हो जाती है। ग्रन्थों में तीन स्तरों पर ओम् के जप की बात कही गई है। आरंभ में जप की प्रक्रिया वाणी के स्तर पर होती है, मगर अभ्यास से यह मानसिक जप और फिर अजपा जप की स्थिति तक पंहुच जाती है। मनु महाराज कहते हैं कि यज्ञ से बहुत लाभ होता है मगर यज्ञ से दस गुणा लाभ जप से होता है। मानसिक जप से सौ गुणा अधिक फल तथा अजपा जप से हजार गुणा अधिक लाभ होता है। योगदर्शन में जप का लाभ बताते हुए कहा है-**ततः प्रत्यक्चैतनाधिगमोऽध्यन्तरायाभावश्च।** (1-29) इस सूत्र में ओम् के जप के दो लाभ बताए गए हैं। पहला यह कि इससे अन्तरात्मा का साक्षात्कार होता है और दूसरा विघ्नों का नाश होता है। महर्षि दयानन्द जी इस सूत्र के सम्बन्ध में लिखते (ऋ०भा०भू०उपा०) हैं-'फिर उससे उपासकों को यह भी फल होता है... (ततः प्र०) अर्थात् उस अन्तर्यामी परमात्मा की प्राप्ति और (अन्तराय) उसके अविद्यादि क्लेशों तथा रोग रूप विघ्नों का नाश हो जाता है।' अर्थ चिन्तन सहित जप से जब मन की वृत्तियां संयमित हो जाती हैं तो व्यक्ति को अपने स्वरूप का साक्षात्कार हो जाता है तथा समस्त विघ्नों की भी समाप्ति हो जाती है। सही ढंग से किया गया जप ही साधक का ध्यान में प्रवेश कराता है। सांख्यकार का कथन है-**ध्यानं निर्विषयं मनः।** ईश्वर-चिन्तन के अतिरिक्त किसी भी सांसारिक विषय में जब मन न जाए तो उस स्थिति को यहां पर ध्यान कहा गया है। इसी बात को योगदर्शनकार ने अलग ढंग से कहा है-**तत्र प्रत्यैकतानता ध्यानम्।** (3-2) अर्थात् उस धारणा में ज्ञान का एकसा बना रहना ध्यान कहा जाता है। इस सम्बन्ध में महर्षि दयानन्द सरस्वती जी लिखते हैं-'धारणा के पीछे उसी देश में ध्यान करने और आश्रय लेने के योग्य जो अन्तर्यामी व्यापक परमेश्वर है, उसके प्रकाश और आनन्द में अत्यन्त विचार और प्रेम भक्ति के साथ इस प्रकार प्रवेश करना कि जैसे-समुद्र के बीच में नदी प्रवेश करती है। उस समय में परमेश्वर को छोड़ किसी अन्य पदार्थ का स्मरण नहीं करना किन्तु उसी अन्तर्यामी के स्वरूप और ज्ञान में मग्न हो जाना, इसी का नाम ध्यान है।'

'आर्य प्रतिनिधि' पाक्षिक समाचार-पत्र की सदस्यता ग्रहण कर तथा धार्मिक एवं सामाजिक आयोजनों में 'आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा' को सहयोग राशि भेजकर वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार में सहभागी बनिये।
सम्पर्क-मो० 08901387993

ऋषिबोध की सार्थकता

❑ डॉ. बिजेन्द्रपाल सिंह, चन्द्रलोक कॉलोनी, खुर्जा, मो० 8979794715

महर्षि दयानन्द जी सरस्वती महाराज का नाम स्मरण होते ही मस्तिष्क में उनके जीवन के दृश्य उभरने लगते हैं

और कुछ करने को मन में विचार आने लगते हैं। जो सज्जन ऋषि में श्रद्धा रखते हैं, उनका भी मन प्रत्येक समय वेदप्रचार व समाज में कुप्रथओं तथा पाखण्डों को दूर करने को अवश्य करता होगा और अनेक आर्यजन ऋषि के कार्य में लगे हुए भी हैं। स्थान-स्थान पर भव्य व छोटे स्तर पर अनेक कार्यक्रम आयोजित भी होते रहते हैं।

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी महाराज का बाल्यावस्था का नाम मूलशंकर था। इनके पिता ने शिवरात्रि के दिन अपने पुत्र को व्रत रखने को कहा। पूरे दिन मन्दिर में शिवभक्त आते रहे, रात्रि को मूलशंकर मन्दिर में बैठकर जागता रहा। उसके पिता ने उससे कहा था कि शिवजी संसार की रक्षा करने वाले हैं। अर्धरात्रि को भक्तगण कथा-कीर्तन करते-करते सो गये। यह बालक उत्सुकता पूर्वक जागता रहा व शिवलिङ्ग को देखता रहा। अचानक कुछ मूषक आए और मूर्ति पर उछलकूद करने लगे। बालक इस दृश्य को देखकर आश्चर्यचकित रह गया। उसने देखा कि मूषक शिवलिङ्ग पर चढ़ाये फल-फूल व नैवेद्य को खा रहे हैं, परन्तु जो त्रिशूल वाला शिव संसार की रक्षा करता है, अपनी रक्षा मूषकों से भी नहीं कर रहा है, यह ईश्वर नहीं हो सकता। उस बालक के मन में मूर्तिपूजा से विश्वास हट गया और वह ईश्वर (शिव) जो संसार की रक्षा कर रहा है, क्या है? ऐसा जानने की शंकाएं मन में आने लगीं। उसी बालक ने दण्डी स्वामी विरजानन्द जी के सान्निध्य में आकर यह जाना कि ईश्वर क्या है? वहाँ से वेदप्रचार करने तथा संसार को पाखण्ड व अन्धविश्वासों से मुक्त कराने की प्रतिज्ञा लेकर वही मूलशंकर महर्षि दयानन्द सरस्वती के नाम से प्रसिद्ध हुआ।

आज महर्षि हमारे सामने एक प्रेरणास्रोत हैं, जो प्रत्येक आर्य को प्रेरणा दे रहे हैं कि संसार का उपकार करो, अंधविश्वास, पाखण्ड, कुरीतियों, कुप्रथाओं तथा बुराइयों को दूर करो, वेदप्रचार करो, जिससे धरती पर कहीं असत्य, अन्याय, ईर्ष्या-द्वेष, पक्षपात आदि न रहे। ऋषि ने इस कार्य हेतु आर्यसमाजों की स्थापना की आर्यसमाजों से चारों ओर दिन-रात प्रचार होना चाहिए। ऋषि के कार्य होने चाहिएं। आज भारत में ही नहीं अपितु विश्वभर में आर्यसमाज है। श्रद्धालुजन वहाँ ऋषि का कार्य कर रहे हैं।

आर्यों का मुख्य उद्देश्य वेदप्रचार करना है। हमें ऋषिबोध व जितने भी आर्यपर्व हैं। जैसे-पंडित लेखराम, महाशय राजपाल जी, स्वामी श्रद्धानन्द जी, ध्रुवानन्द जी, स्वामी ओमानन्द जी, आचार्य बलदेव जी, डॉ. धर्मवीर, क्रान्ति के अमर बलिदानी पं० रामप्रसाद बिस्मिल, चन्द्रशेखर आजाद, भगतसिंह, ठा० रोशनसिंह, लाहिड़ी, हकीकतराय आदि जो मात्र भूमि के लिए बलिदानी हुए, भारत माँ के लाल उनके जन्मदिवस पुण्यतिथि आदि पर सोत्साह कार्यक्रम आयोजित करने चाहिएं। आर्यसमाज का बहुत बड़ा दायित्व है, क्योंकि एकमात्र ऐसी यही संस्था है। जहाँ मानवता, ज्ञान-विज्ञान, सबके सुख, उन्नति, ऐश्वर्य का प्रकाश है, श्रेष्ठता का मार्ग है, हमें ऋषि का ऋणी रहना चाहिए। यह पूर्वजों का ऋण है कि हम भी वेदप्रचार करें, साहित्य बांटें, कहीं शादी-विवाह, जन्मदिन व अन्य शुभकार्य में जायें तो साहित्य, छोटे-छोटे ट्रैक्ट छपवाकर बांटें। आजकल की कुरीतियों, पाखण्डों को दूर करने का प्रयत्न करें। घरों पर यज्ञ करें। वहाँ ईश्वर जैसे विषय पर बोलें। मृतक श्राद्ध, मूर्तिपूजा के विषय में बताएँ।

आज दहेजप्रथा का रोग लोगों को लगा हुआ है। घरेलू झगड़े बढ़ते जा रहे हैं, पाश्चात्य संस्कृति विषवेल की भाति बढ़ रही है। चरित्र व नैतिक शिक्षा की बात करें। ऐसे बहुत-से विषय हैं, जिन पर प्रकाश डालकर समाज में श्रेष्ठता आ सकती है। लोग सत्यार्थप्रकाश पढ़ें व आर्ष साहित्यों का स्वाध्याय करें। आज गुरुकुल शिक्षा पर भी बल देना चाहिए क्योंकि शिक्षा ही व्यक्ति, समाज व राष्ट्र को उन्नति के मार्ग पर ले जा सकती है। मैकाले ने सर्वाधिक आघात हमारी वैदिक संस्कृति व संस्कृत तथा गुरुकुल शिक्षा पर ही किया था। विदेशी लुटेरों ने गुरुकुल ही नष्ट किए थे। नालंदा व तक्षशिला के खण्डहर इसके उदाहरण हैं। आइये! ऋषिबोध पर कुछ नया करें और प्रण करें कि हम वेदप्रचार करते रहेंगे। वेद की ज्योति चारों ओर प्रज्वलित करते रहेंगे। अपने अन्दर, परिवार में, समाज में, चारों ओर वेद ज्ञान के दीप प्रज्वलित करते रहेंगे। यही होगी ऋषिबोध की सच्ची सार्थकता।

ईश्वर की स्तुति एवं वैदिक धर्म

❑ सूबेदार करतारसिंह आर्य सेवक आर्यसमाज गोहाना (सोनीपत)

वह परमात्मा सब में व्यापक, शीघ्रकारी और अत्यन्त बलवान जो शुद्ध सर्वज्ञ, सबका अन्तर्यामी, सर्वोपरि, विराजमान, सनातन, स्वयंसिद्ध परमेश्वर अपनी जीवरूप सनातन अनादि

प्रजा को अपनी सनातन विद्या से यथावत् अर्थों का बोध वेद द्वारा कराता है। यह 'सगुण स्तुति' अर्थात् जिस गुण से सहित परमेश्वर की स्तुति करना वह सगुण और (अकाय) अर्थात् वह कभी शरीर धारण व जन्म नहीं लेता, जिसमें छिद्र नहीं होता और जो नाड़ी आदि के बन्धन में नहीं आता और कभी पापाचरण नहीं करता, जिसमें क्लेश, दु:ख, अज्ञान कभी नहीं होता, इत्यादि जिस-जिस राग-द्वेषादि गुणों से पृथक् मानकर परमेश्वर की स्तुति करना है, वैसे गुण, कर्म, स्वभाव अपना भी करना। जैसे वह न्यायकारी है, तो आप भी न्यायकारी होवे और जो केवल भाण्ड के समान परमेश्वर के गुण-कीर्तन करता जाता और अपने चरित्र को नहीं सुधारता, उसका स्तुति करना व्यर्थ है।

(सप्तम समुल्लास)

जीवनभर गुड़-गुड़ कहने से मुँह मीठा नहीं होगा। यदि हम गुड़ प्राप्त करने का प्रयास करेंगे तो गुड़ प्राप्त कर सकेंगे। उस गुड़ के खाने से मुँह भी मीठा होगा। इसी प्रकार यदि प्रभु का गुण-कीर्तन करते रहेंगे और अपने चरित्र में सुधार नहीं करेंगे तो स्तुति करना व्यर्थ है।

उसी सच्चिदानन्द को अपना इष्टदेव मानो जो सब जगत् का कर्त्ता, सबका इष्ट, सबके उपासना के योग्य, सबका धारण करने वाला, सबमें व्यापक और सबका कारण है, जिसका आदि-अन्त नहीं, जो सच्चिदानन्द स्वरूप है, जिसका जन्म कभी नहीं होता और जो कभी अन्याय नहीं करता, इत्यादि विशेषणों से वेदादि शास्त्रों में जिसका प्रतिपादन किया हो, उसी को इष्टदेव मानना चाहिये और जो कोई इससे भिन्न को इष्टदेव मानता है, उसको अनार्य अर्थात् अनाड़ी कहना चाहिये।

(ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका, वेदविषयविचार)

परमात्मा के रचे पदार्थ सबके लिए एक से हैं। सूर्य और चन्द्रमा सबको समान प्रकाश प्रदान करते हैं। वायु व जलादि वस्तुएँ सबको एक-सी दी गई हैं। जैसे वे पदार्थ ईश्वर की देन हैं, सब प्राणियों के लिए एक से हैं। ऐसे ही परमेश्वर प्रदत्त धर्म भी मनुष्यों के लिये एक और एकसा होना चाहिये।मनुष्य को योग्य है कि काम से अर्थात् झूठ से कामना सिद्ध के कारण से वा निन्दा-स्तुति आदि के भय से भी धर्म का त्याग कभी नहीं करना चाहिये। और लोभ से चाहे भोजन-छादन, जलपान आदि की जीविका भी अधर्म से हो सके वा प्राण जाते ही हो परन्तु जीविका के लिए भी धर्म को कभी न छोड़े, क्योंकि जीव व धर्म नित्य हैं तथा सुख-दु:ख दोनों अनित्य हैं। अनित्य के लिये नित्य छोड़ना अतीव दुष्ट कर्म है। इस धर्म का हेतु कि जिस शरीर आदि से धर्म होता है वह भी अनित्य है। धन्य वे मनुष्य हैं, जो अनित्य शरीर और सुख-दु:ख आदि के व्यवहार में वर्तमान होकर नित्य धर्म का त्याग कभी नहीं करते। जो धर्मयुक्त व्यवहार में ठीक वर्तता है, उसको सदा सर्वत्र लाभ और जो विपरीत वर्तता है, वह सदा दु:खी होकर हानि कर लेता है।

प्राचीनकाल में आर्यजन वैदिक संस्कार किया करते थे, वैदिक आचार युक्त होते थे, इसलिये उनकी सन्तान में ओज होता था, तेज होता था और शूरवीरता होती थी, परन्तु इस युग के लोग इन्द्रियाराम और विषयानन्द को ही प्रधानता दिए हुए है। वैदिक संस्कारों का त्याग किये बैठे हैं। लोगों के घरों में कुरीतियों की भरमार है। इसलिये उनकी सन्तान भी निस्तेज, दीन, दुखिया उत्पन्न होती है।

मैंने आर्यसमाज का उद्यान लगाया है। इससे मेरी अवस्था एक माली की-सी है। पौधे में खाद डालते समय राख और मिट्टी सिर पर पड़ ही जाया करती है। मुझ पर राख और धूल चाहे जितनी पड़े, मुझे इसका कुछ भी ध्यान नहीं परन्तु वाटिका हरी-भरी रहे और निर्विघ्न फूले-फले (महर्षि)।

वेदों की आज्ञा पर चलना धर्म है। वेदों में प्रतिमा पूजन की आज्ञा नहीं है। इसलिए उनके पूजन में आज्ञाभंग करने का दोष है। पुराणों में जो मूर्ति का पूजन लिखा है, वह सब गप्प है और असार है। जो यह कहते हैं कि अपनी भावना का फल होता है, उनका कथन भी सत्य नहीं है। तुम बैठे चक्रवर्ती राजा बनने की भावना करते रहो तो इतने से सार्वभौम राजा नहीं बन सकोगे। भावना भी सच्ची होनी चाहिए।

आर्यसमाज के ठीक नियमों को समझकर आपको वेद आज्ञानुसार सबके हित में अवश्य लग जाना चाहिये। विशेषत:

अपने आर्यावर्त देश के सुधारने में अत्यन्त श्रद्धा, प्रेम और भक्ति होनी चाहिए। सबको अपने समान जानकर उनके क्लेशों को काटने और सुखों को बढ़ाने के लिये प्रयत्न और उपाय करना उचित है। सबका हित करना परमधर्म है। इसी के प्रचार की वेद में आज्ञा पाई जाती है।

हर समाज के वृद्धि के तीन प्रमुख हेतु हैं–पहला दैवी अर्थात् ईश्वर पर हमारा विश्वास हो। दूसरा मानवी अर्थात् सब लोग परस्पर एक–दूसरे के सहायक हों और कोई किसी से द्वेष न करे। तीसरा प्राकृतिक अर्थात् जगत् के समस्त पदार्थ हमारे कल्याण के लिए बनाए गए हैं। उनका उचित प्रयोग हमारी उन्नति का साधक है। ईश्वर ने किसी मनुष्य को द्वेष के लिए उत्पन्न नहीं किया और न किसी भौतिक पदार्थ को हमारी हानि के लिए बनाया है। हमारा वर्ताव अपने को पराया और पराये को अपना बना देता है। ईश्वर की शक्ति, प्राणिमात्र से प्रेम और प्राकृतिक पदार्थों का प्रयोग की योग्यता, इन तीन साधनों पर सामाजिक उन्नति आधारित है।

निम्नलिखित शिक्षाप्रद भजन वैदिकधर्मी विद्वान् कवियों के लिखे जाते हैं। इनको पढ़कर धर्मलाभ उठाएँ।

(1)

ईश की भक्ति बिना जीवन ये निष्फल जाएगा।
कीमती चोला ना फिर हाथ तेरे आएगा।
किसलिए भेजा था बन्दे तुमको मालिक ने यहाँ।
भूल बैठा फर्ज को तू, याद रख पछताएगा।
नेकियों के बदियों की तरह माईल हुआ।
पाप की गठरी लिये सिर पर यहाँ से जाएगा।
चन्द रोजा जिन्दगी पर इस कदर ना भूल तू।
खाक का पुतला बना तू, खाक में मिल जाएगा।
भाई-बन्धु रिश्ते-नाते, कोठी बंगले मालो जर।
साथ क्या लाया था बन्दे, साथ क्या ले जाएगा।
काम आएगी तेरे आखिर, प्रभु की बन्दगी।
बन्दगी से ही बन्दे मुक्ति पद को पाएगा।

(2)

एक न एक दिन सबको जाना है फना के सामने।
चल नहीं सकती किसी की कुछ कज़ा के सामने।
छोड़नी होगी यह दुनिया सब को फानी एक दिन,
हर कोई मजबूर है हुक्मे खुदा के सामने।
धैर्य्य ही रखना है लाजिम ऐ बशर तुमको सदा,
रंजोगम में और अलम में हर बला के सामने।
आशावादी बन सदा और रख प्रभु का आसरा,
रख तू अपनी मुश्किलें मुश्किल कुशा के सामने।
वह प्रभु है सबका रक्षक उसकी माया को न भूल,
सिर झुका तू हर समय, परमात्मा के सामने।
बच बुराइयों से सदा तू नेकियों से प्यार कर,
आयेंगे एहमाल तेरे सब खुदा के सामने।
अपने कर्मों के मुताबिक आते हैं सुख-दुःख सभी,
राजी रह तू हर समय प्रभु की इच्छा के सामने।
वक्त है अब भी संभल चल धर्म के ही मार्ग पर,
हाजतें अपनी तू रख हाजत रवा के सामने।
छोड़ेगी न मौत हरगिज चाहे जीले साल सौ,
'सेवक' इक दिन सबको जाना है चिता के सामने।

(3)

ओ लौ लगाने वाले, भगवन् से लौ लगाता।
जीवन का लक्ष्य जो था, उसको तू आज पाता।
झंझट जहाँ से तेरा, कुछ न बिगाड़ सकते।
उसका यदि तू बनकर, अपना उसे बनाता।
विषयों के वश में तूने, संकट अनेक पाए।
उसकी तरफ जो चलता, संकट न कोई पाता।
संतोष धन के बल पर, चिन्ता को जीत लेता,
हर हाल मस्त रहता, हर हाल मुस्कुराता।
ऐ 'देश' ऋण चुका कर, भांति ऋषि की चलता।
बिगड़ी दशा को कुछ तो, तू भी बना के जाता।

अमूल्य शिक्षा

1. बहुत कम प्रतिज्ञाएँ करो।
2. हमेशा सच बोलो।
3. किसी की निन्दा मत करो।
4. अच्छे पुरुषों का संग करो, नहीं तो अकेले ही रहो।
5. जीवन को नियमित रखो।
6. जूआं मत खेलो।
7. मादक (नशीली) वस्तुओं का सेवन मत करो।
8. उत्तम संग और मधुर भाषण सद्गुणों का स्तम्भ है।
9. आमदनी से सदा कम खर्च करो।
10. जहाँ तक हो सके ऋण मत करो।
11. सादगी सदाचार की जननी है और श्रृंगार व्यभिचार का दूत है।
12. सत्य अपने आप नहीं जीतता, उसे पुरुषार्थ से जिताना पड़ता है।

हे प्रभु, वर दो!

❑ प्राचार्य अभय आर्य, रोहतक

पिछले अंक में जो पंडित धर्मवीर लेखराम पर लेख दिया था, उस संदर्भ में आर्यसमाज के इतिहास शिरोमणि,

ज्ञानवृद्ध, वयोवृद्ध, श्रद्धासिक्त मिशनरी श्रीयुत् राजेन्द्र 'जिज्ञासु' जी का फोन आया। उन्होंने कहा कि यह लेख आपके आज तक के लिखे लेखों में सबसे श्रेष्ठ है साथ ही उन्होंने कहा कि पंडित लेखराम पर आज तक लिखे सर्वोत्कृष्ट श्रेणी के लेखों में शामिल होने योग्य यह लेख है। उन्होंने इस संदर्भ में कुछ धुरन्धर आर्यनेताओं व विद्वानों का नाम भी लिया। उनका नाम यहाँ देना तो मैं उचित नहीं समझता। परमात्मा से यही प्रार्थना है, यही कामना है कि जीवन के अन्तिम श्वास तक लेखनी व वाणी द्वारा आर्यसमाज का काम करता रहूँ।

पिछले दिनों आर्यसमाज मुल्तान नगर, दिल्ली में श्रीयुत् 'जिज्ञासु' जी की उपस्थिति में प्रधान, आर्यसमाज मुल्तान नगर ने कहा कि 'जिज्ञासु' जी ने आर्यसमाज में वह स्थिति प्राप्त कर ली है कि इनकी डॉट-डपट का हमें बुरा नहीं मानना चाहिये। हालांकि मैं उस कार्यक्रम में उपस्थित नहीं था। मेरे मित्र ने मुझे यह जानकारी दी। इस तथ्य का वर्णन इसीलिए किया कि मेरी उनके विषय में पहले से ही यह धारणा है। ऐसे व्यक्ति अपने ज्ञान के साथ-साथ अपने तप व श्रद्धा से यह स्थान प्राप्त कर लेते हैं-**'पिता भवति मन्त्रदः।'** बेटियों, पत्नियों को घर छोड़कर, सुदूर प्रान्तों की प्रचार यात्राएँ और वह भी बिना किसी सभा-संस्था के सहयोग के? हम कैसे इस रास्ते पर चल पायेंगे?

एक मुसलमान युवक इनके साहित्य से बहुत प्रभावित है। इन्हें आदर, श्रद्धा व स्नेह से 'दादाजी' कहकर संबोधित करता है। ऐसे न जाने कितने तप और श्रद्धा के निशान इन्होंने समय चक्र पर छोड़े हैं। ऐसे महान् व्यक्तित्व के मुख से अनुमोदन की ये बातें सुनकर प्रेरणापरक संतोष मिलता है। लगभग 17 वर्ष से निरन्तर सभा की पत्रिका की लेखों द्वारा सेवा करते हुए। बीच में एकाध व्यक्ति ने व्यंग्य भी किये, लेकिन अनेक विद्वानों ने उत्साह बढ़ाया। अब 'जिज्ञासु' जी ने जो कहा, उससे बड़ा पारितोषिक और कौन दे सकता है? काम करते रहें, ईश्वर सहायता करता है। अभी हमने अपने विद्यालय में सफाई का कार्य करने वाले एक युवक अरुण की यज्ञ में श्रद्धा देखकर उसे यज्ञ सिखा दिया। दलित परिवार में जन्म लेने वाले इस युवक ने कुछ दिन पहले एक श्रद्धावान् युवा मनोज के कहने पर उसके घर हवन कर दिया। वह युवक बहुत प्रभावित हुआ और मुझसे मिला। उसने कहा कि यज्ञ को बढ़ावा देने के लिए हमें कोई दिन ऐसा चुनना चाहिए जिस दिन सारे देश में श्रद्धा रखने वाले संस्थान-संगठन एक ही समय यज्ञ करें। मैं हैरान रह गया। इस युवक के अन्दर यह विचार कैसे आया? मैंने संकल्प लिया कि Face-book आदि के माध्यम से यह प्रार्थना की जाएगी कि 25 मार्च चैत्र शुक्ल प्रतिपदा नवसृष्टिसंवत्सर पर सूर्योदय के समय संगठन व संस्थान यज्ञ करें। इससे उस युवा के शुभसंकल्प को उड़ान मिलेगी। हे प्रभु, वर दो। **'तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु।'**

प्रेरक वचन

- समय सबसे बड़ी पूंजी है।
- जनहित सबसे बड़ा उद्देश्य है।
- कमजोर लोग किस्मत में यकीन करते हैं।
- इंसान की तकदीर का सांचा उसी के हाथ में होता है।
- सेवा मानव जीवन की शोभा है।
- कड़ी मेहनत का कोई विकल्प नहीं।
- परिवर्तन में कोई बुराई नहीं अगर वह सही दिशा में हो।
- तन और मन के तालमेल से ही सुखद जीवन संभव है।
- प्रकृति सबसे बड़ी रचयिता है।
- मन और विचारों की पवित्रता से ही मनुष्य सत्कर्म करता है।
- मन की पवित्रता से ही तन की पवित्रता संभव है।
- कामयाबी के शिखर पर कुशलता के सोपानों से चढ़ा जाता है।
- प्रेरणा की शक्ति से असंभव भी संभव होता है।
- जीवन की दिशा बदलनी है तो पहले कर्म की दिशा बदलिए।
- मननशीलता मनुष्य को गर्त में गिरने से बचाती है।

संकलन-भलेराम आर्य गांव-सांघी (रोहतक)

हम सुरक्षित हो सकते हैं यदि हम अपनी रक्षा के सभी संभव उपाय करें

❑ मनमोहन कुमार आर्य, देहरादून

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। वह अकेला रहकर जीवनयापन नहीं कर सकता। उसे समान विचारों तथा अपने शुभचिन्तकों की आवश्यकता होती है जो उसकी चिन्ता करें,

उससे प्रेम करें व उससे स्नेह करें। ऐसे वातावरण में ही मनुष्य सुरक्षित रह सकता है। आज के संसार की विडम्बना यह है कि ज्ञान व विज्ञान बढ़ जाने पर भी संसार में सत्य व असत्य के आधार पर सत्य विचारधारा व सत्य धर्म का अस्तित्व स्वीकार नहीं किया गया है। सभी मत-मतान्तर, जो अविद्या से युक्त हैं, जिनकी अविद्या का अनावरण ऋषि दयानन्द ने अपने अमरग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश में किया है, वह भी स्वयं को सत्य धर्म ही मानते हैं। इतना ही नहीं कुछ मत तो अपने मत का प्रचार कर उसे येन-केन प्रकारेण सबसे मनवाना भी चाहते हैं। इसी विचारधारा ने भारत के अधिकांश लोगों को अपने पूर्वजों की सत्य वैदिक विचारधारा से दूर कर उन्हें अविद्यायुक्त जीवन जीने पर विवश किया है। आज भी सत्य को केन्द्र में रखकर संसार के मत-मतान्तर परस्पर प्रेम एवं सौहार्दपूर्वक संवाद नहीं करते जिसका परिणाम यह होता है कि सत्य का ग्रहण और असत्य का त्याग नहीं हो पाता। सभी अपनी-अपनी ढफली अपना-अपना राग के समान व्यवहार करते हुए दृष्टिगोचर होते हैं जिसमें हमारे आर्यावर्तीय वा भारत देश के मत-मतान्तर भी सम्मिलित है। विवेक के आधार पर देखा जाये तो बिना विचार किये किसी विचार व विचारधारा को ग्रहण करना व उसे अपनाना उचित नहीं कहा जा सकता। परमात्मा ने मनुष्य को बुद्धि किस लिये दी है? इसलिये नहीं कि किसी विचार व विचारधारा को नेत्र मूंदकर बिना सत्यासत्य की परीक्षा किये माना जाये। बुद्धि इसलिये दी गई है कि हम प्रत्येक विचार व सिद्धान्त की परीक्षा कर उसे सत्य होने पर ही स्वीकार करें। ऐसा करने पर ही विश्व में सुख व शान्ति तथा संसार के सभी लोगों को सुख प्राप्त हो सकता है। ऐसा न होने पर वही होगा जो मध्यकाल से आज तक होता आया है जिसमें युद्ध व हिंसा के द्वारा एक-दूसरे देश पर कब्जा और ऐसी अनेक बातें सम्मिलित हैं।

संसार के मत-मतान्तरों ने असंगठित भोले-भाले लोगों का जीवन असुरक्षित कर दिया है। विधर्मी उन्हें अपने मत में येन केन प्रकारेण सम्मिलित करना चाहते हैं। इसके लिये भय, लोभ व छल आदि अनेक प्रकार के साधनों का प्रयोग किया जाता है। अत: सत्य प्रिय लोगों को सुरक्षित रखने का प्रथम महत्त्वपूर्ण उपाय यही होता है कि वह स्वाध्यायशील बने। सत्य ग्रन्थों वेद व सत्यार्थप्रकाश आदि का नित्यप्रति स्वाध्याय व अध्ययन करें। सज्जन पुरुषों की सगति करें। आपस में मिलकर संगठित रहें। अपने विवादों व समस्याओं को परस्पर मिलकर शान्तिपूर्वक सुलझायें। अपने अन्धविश्वासों व वेद विरोधी अव्यवहारिक सामाजिक कुरीतियों को दूर करें। राम व कृष्ण को मानने वाले निर्धन व दुर्बल लोगों की उन्नति व सुख के लिये सेवा व दान के द्वारा उनके जीवन को सुरक्षित व सुखी करने का प्रयत्न करें। समाज में यह काम नहीं हो रहे हैं, इसीलिये आर्य व हिन्दू सामाजिक व संगठन की दृष्टि से निर्बल व कमजोर हैं। निहित स्वार्थों व महत्त्वाकांक्षी लोग अपनी बुरी दृष्टि इन लोगों पर रखते हैं और इन्हें अनेक प्रकार से पीड़ा देते हैं। ऐसे लोग देश व समाज सभी के लिये हानिकारक होते हैं। वह देशहित की भी परवाह नहीं करते। उन्हें कुछ स्वार्थी राजनीतिक दलों से समर्थन व सहयोग मिलता है। भारत में सामाजिक व राजनीतिक स्थिति है वह संसार के अन्य देशों में नहीं है। अमेरिका, रूस, चीन, फ्रांस, जर्मनी, इजराइल आदि देशों में हमारे देश के समान स्वार्थ व वोटबैंक की राजनीति कर लोगों को आपस में बांटा नहीं जाता। किसी वर्ग विशेष की हिंसात्मक एवं अन्य सम्प्रदायों के विरुद्ध विचारों को संरक्षण नहीं दिया जाता। वहां अल्पसंख्यकवाद का कृत्रिम सिद्धान्त नहीं पाया जाता है। वहां के सभी नियम व कानून देश व समाजहित में मत-सम्प्रदाय व धर्म से ऊपर उठकर निर्धारित किये जाते हैं जिसे समान आचार-संहिता कह सकते हैं। यही कारण है कि उन देशों में उन्नति हो रही है। वहां के सभी लोग हमारे देश से अधिक सुखी व सुरक्षित हैं। भारत इन देशों से कहीं पीछे हैं। सौभाग्य से भारत की वर्तमान सरकार निष्पक्ष एवं देशहित को महत्त्व देने वाली सरकार है, परन्तु उसके मार्ग में भी अनेक प्रकार के अवरोध खड़े किये जाते हैं जिससे वह जितना अधिक काम कर सकती है, नहीं कर पाती। देश की युवा पीढ़ी पर ही भरोसा किया जा सकता है। वह राजनीतिक दलों के विचारों व क्रियाकलापों पर दृष्टि रखते हुए समय आने पर अपना सही

निर्णय करे, तभी देश उन्नति के पथ पर अग्रसर रहकर अपने सभी नागरिकों को सुरक्षा व सुख के साधन उपलब्ध करा सकता है। भविष्य क्या होगा, कहा नहीं जा सकता। स्थिति यह है कि हम महाभारत युद्ध के बाद से अवनत व असुरक्षित होते जा रहे हैं। कारण यही है कि हमने सत्य का ग्रहण और असत्य का त्याग करना छोड़ दिया है। हम संगठन के महत्त्व को भूल गये। हमने अपने ही भाइयों के साथ निष्पक्षता व न्याय का व्यवहार नहीं किया। यदि न्यायपूर्वक व्यवहार किया होता तो आज हमारा समाज विश्व का सबसे संगठित एवं आदर्श समाज होता। अभी भी देर नहीं हुई है। यदि हम अब न सम्भले और हमने वेद के विचारों व सिद्धान्तों को न अपनाया तो भविष्य में हमे शायद सुधरने का अवसर भी नहीं मिलेगा। इतिहास में इसके उदाहरण मिल जायेंगे। सबसे उत्तम विचारधारा वही होती है जो पूर्ण सत्य पर आधारित व सत्य को समाहित किये हुए हो। हमें इसका ध्यान रखते हुए वेद, उपनिषद, दर्शन, विशुद्ध-मनुस्मृति, सत्यार्थप्रकाश, ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका आदि ग्रन्थों से प्रेरणा लेनी होगी। ऐसा करने पर ही हमारा अर्थात् समस्त हिन्दू वा आर्य जाति का कल्याण हो सकता है। अन्य कोई मार्ग दिखाई नहीं देता है।

हम इस लेख में अपनी जाति की सुरक्षा के उपायों की चर्चा करना चाहते हैं। हमारे देश में अनेक मत व सम्प्रदायों को मानने वाले लोग हैं। देश का सबसे बड़ा वर्ग हिन्दुओं का है जिनकी जनसंख्या लगभग 100 करोड़ बताई जाती है। यह सब वेद और ईश्वर को मानते हैं। यह भी बता दें कि पुराणों में वेदों की प्रशंसा है और बहुत से वैदिक काल के ऐतिहासिक तथ्यों का समावेश भी है। पुराणों में अनेक ऋषि व मुनियों के नाम आते हैं जो वेद को ईश्वर के बाद सबसे अधिक महत्त्व देते थे। ऋषि दयानन्द भी उन सभी ऋषि-मुनियों सहित ईश्वर व वेद के प्रतिनिधि थे। इन सब वेदानुयायियों की रक्षा कैसे हो यह विचारणीय है। इनको खतरा किससे है? इसका उत्तर यह है कि जिन लोगों ने विगत 1200 वर्षों से निर्दोष हिन्दुओं पर अत्याचार, आक्रमण, उत्पीड़न, जुल्म, हत्या, भय, छल व लोभ से धर्मान्तरण, स्त्रियों का अपमान किया है, उस विचारधारा के बढ़ते प्रभाव व आक्रामकता से है। हिन्दू 1 या 2 बच्चे पैदा करते हैं। अधिक उम्र में विवाह करते हैं। बहुत से कुंवारे ही रहते हैं। बहुत से साधु बनकर विवाह ही नहीं करते। इस कारण हिन्दुओं की जनसंख्या वृद्धि की दर कुछ मतों व सम्प्रदायों से बहुत कम है। दूसरे जनसंख्या वृद्धि को वरदान मानते हैं और उसमें किसी प्रकार की रोक व हस्तक्षेप को स्वीकार नहीं करते। उसके पीछे के निहित कारण भी जाने व समझे जा सकते हैं जो इस विषय के विशेषज्ञों की पुस्तकों, लेखों व व्याख्यानों से जाने जा सकते हैं। अतीत में भारत से अनेक देश अलग हुए हैं। पाकिस्तान व बंगलादेश तो हमारे माता-पिता व हमारे अनेक मित्रों की आंखों के सामने बने। वह सब बताते हैं कि इसके पीछे क्या भाव व विचार थे और क्या योजनायें कार्यरत थी। अतः जनसंख्या वृद्धि भारत में ईश्वर व वेद को मानने वाली धार्मिक जनता व संस्कृति को प्रमुख चुनौती व खतरा है। बढ़ती जनसंख्या ने देश के सामने अनेक चुनौतियां उत्पन्न की हैं।

जनसंख्या वृद्धि व असन्तुलन से हमारे देश के गरीब और गरीब हो रहे हैं और अन्य लोग इससे अनेक प्रकार से लाभ भी उठा रहे हैं। हमें जनसंख्या नियंत्रण की नीति बनाने की सरकार से मांग करनी है व उसके लिये सम्भव उपाय करने हैं। दूसरी महत्त्वपूर्ण बात यह है कि हमें ईश्वर व वेद को मानने वाले सब लोगों को संगठित करना है जिससे हम आन्तरिक व बाह्य अशान्ति के अवसर पर अपनी रक्षा करने में समर्थ हो सके। यदि ऐसा नहीं करेंगे तो न तो परमात्मा, न सरकार और न ही हमारे देवी-देवता व अन्य कोई हमें बचा सकता है। सोमनाथ मन्दिर के लूट व पतन में मन्दिर के पुजारी व शिवभक्तों सहित हमारी पुलिस व सेना को भी अकारण लूट के इरादों से मार दिया गया था। माताओं व बहिनों का अपमान किया गया था। ऐसी स्थिति पुनः न आये, इसका हमें प्रबन्ध करना है। हमें नहीं पता कि हिन्दू समाज इसके लिये तैयार होगा या नहीं? होगा तो अच्छा है, इससे उन्हीं व उनकी सन्ततियों की रक्षा होगी। यदि नहीं होगा तो विनाश होना सम्भावित है। इसके साथ ही हमें अपने सभी अन्धविश्वासों व सामाजिक कुरीतियों का सुधार भी करना होगा और इसके लिये ऋषि दयानन्द ने वेदों के आधार पर जो मार्ग बताया है, इसका अनुसरण करना होगा। सूत्र रूप में सत्य का ग्रहण, असत्य का त्याग, अविद्या का नाश तथा विद्या की वृद्धि, वेदों का प्रचार व वेद विरोधियों को शास्त्रार्थ तथा वार्तालाप की चुनौती आदि का प्रयोग करना होगा। यही हमारे सात्त्विक व शान्तिपूर्ण अस्त्र हो सकते हैं। हमें साम्प्रदायिक हिंसा में शहीद व घायल अपने बन्धुओं को भी अपनी श्रद्धा अर्पित करनी चाहिये और उनके परिवारों के साथ खड़ा होना चाहिये। दूसरों की तुलना में हमारी जनसंख्या कम न हो, इस पर विद्वानों व धार्मिक नेताओं को विचार करना चाहिये। हम विद्वानों से भी इस विषय में परामर्श देने की अपील करते हैं।

आचार्य चैतन्य (महात्मा चैतन्यस्वामी) हिन्दी सुधा-निधि की मानद उपाधि से सम्मानित

राजस्थान प्रान्त के अग्रणी साहित्यिक, सांस्कृतिक, शैक्षिक प्रतिष्ठान्, साहित्य मण्डल, श्रीनाथद्वारा (राजस्थान) द्वारा आयोजित एक भव्य समारोह में दिनांक 16 फरवरी, 2020 को आचार्य भगवान्देव 'चैतन्य' (महात्मा चैतन्यस्वामी) जी को उनके द्वारा उत्कृष्ट हिन्दी साहित्य की समृद्धि, राजभाषा हिन्दी की सेवा, प्रखर पत्रकारिता, मानवतावादी प्रबुद्ध वैदिक प्रवक्ता, निष्काम समाजसेवा एवं उत्कृष्ट प्रशासनिकता के लिए 'हिन्दी सुधा-निधि' की मानद उपाधि से सम्मानित किया गया। इस अवसर पर उन्हें उत्तरीय वस्त्र, शॉल, मोतियों की माला, मारवाड़ी सम्मान-सूचक मुकुट, अभिनन्दन पत्र, श्रीफल, श्रीनाथ का भव्य चित्र तथा नगद राशि से सम्मानित किया गया। इस अवसर पर इनके द्वारा किए गए उल्लेखीनय कार्यों का उल्लेख करते हुए अभिनन्दन-पत्र का भी वाचन किया गया। श्रीमती धनवन्ती देवी एवं श्री पण्डित रामशरण शर्मा जी के यहां पैदा हुए चैतन्यजी के अब तक सुबह की तलाश में, हादसों के बीच, खण्डहर का सफर, आकाश अनन्त है, यायावर तेरे प्रतिरूप, आर-पार अपार, अर्थ भूलते शब्द, क्षितिज के इधर तथा नयनों की गगरिया काव्य-संग्रह। अपने-अपने इन्द्रधनुष, शिखर शेष हैं, परिवेश, मुखाग्नि, अमृतवेला कहानी-संग्रहशब्द-शब्द सोच है, मूर्द की लकड़ी, कोख का दर्द, बदरंग हवा, तिनका-तिनका विरासतें लघु-कथा संग्रह, जमीन तलाशती जड़ें, शेष-अवशेष उपन्यास, हिमाचली भाषा में उच्ची धारा रा धुप्पा, वतना ते दूर कथा-संग्रह के अतिरिक्त मुक्ति एवं मुक्ति के साधन, अमरता की ओर, सत्संग का महत्त्व, तप का वास्तविक स्वरूप, स्वाध्याय की महत्ता, मुमुक्षुत्व क्या है?, मानवता के आठ सूत्र, ईश्वर-प्रणिधान, गीता पर एक हजार एक प्रश्नोत्तर, उपनिषद् पर एक हजार एक प्रश्नोत्तर, श्रीकृष्णभक्ति रहस्य, गुरु और उसका महत्त्व, सोलह संस्कारों का महत्त्व, वेद की महत्ता एवं ईश्वर सिद्धि, प्रभु से मित्रता करें, अन्य कोई मार्ग नहीं, विद्वानों का संग क्यों करें, गृहस्थ को कैसे स्वर्ग बनाएं, क्रान्ति के अग्रदूत, गुरु-शिष्य दोनों अनुपम विलक्षण, अपने स्वरूप की पहचान, गोआ का खूनी इतिहास, बन्दा वैरागी, स्तुति, प्रार्थना व उपासना क्यों?, सत्यमेव जयते...., राज्य व्यवस्था कैसी हो?, गृहस्थ को सुखी बनाने के सूत्र, नयनों की गगरिया, वैदिक चारधाम यात्रा, वैदिक तीर्थाटन, वैदिक चिन्तन-1 से 3, वैदिक व्रतानुष्ठान, महाभारत प्रश्नोत्तर, वैदिक स्वर्गलोक, क्या पुनर्जन्म नहीं होता, जीवात्मा की गति, सोमरस : वैदिक विवेचन, देवयज्ञ से आत्मयज्ञ की ओर, वैदिक चिन्तन, प्रेरक विचार, श्रद्धानन्द, दिव्य सन्तान, जीवनोपयोगी तीन सूत्र, वाल्मीकि रामायण पर प्रश्नोत्तर, वैदिक चिन्तन-2, वैदिक शतक-1, यज्ञ विवेचना, वेदपथ तीस पग-1 भाग-2, महर्षि दयानन्द जी के यज्ञ के सम्बन्ध में अनुपम विचार, अन्त:करण का सदुपयोग, सुसंस्कृत व्यक्तित्व, भद्र बनें, वैदिक शतक-2, सुखी जीवन के सोपान आदि (अब तक कुल लगभग 80 पुस्तकें प्रकाशित) आध्यात्मिक ग्रन्थ छप चुके हैं। अनेक प्रबुद्ध समीक्षकों ने इनकी रचनाओं पर समीक्षा की है। 'बदरंग हवा' की समीक्षा करते हुए समीक्षक ने लिखा है-'....प्रेमचन्द की तरह ही चैतन्य जी के कथा सुनाने के ढंग में एक अपनापन है और उनकी तरह ही वह कहानी की पूरी भूमिका बान्धने के बाद ही पात्रों और घटनाक्रम को सामने लाते हैं....' इनके काव्य के सम्बन्ध में एक समीक्षक ने लिखा है-'चैतन्य के काव्य में अज्ञेय की चिंतनशीलता, त्रिलोचन का काव्य सौन्दर्य और नागार्जुन का फक्कड़पन एक साथ देखने को मिलता है।'

होलिकोत्सव सम्पन्न

आर्यसमाज इसराना जिला पानीपत की बड़ी चौपाल में 9 मार्च 2020 को हवन-यज्ञ के पश्चात् होलिकोत्सव उत्साह पूर्वक मनाया गया। इस उत्सव पर प्रसिद्ध वैदिक विद्वान् श्री ओमप्रकाश शास्त्री व श्री पं० वासुदेव आर्य पानीपत ने महर्षि दयानन्द सरस्वती के जीवन पर प्रकाश डाला तथा आडम्बर व अन्धविश्वास से दूर रहने की प्रेरणा दी। गांव की चौपाल पूरी तरह से युवक व युवतियों से भरी हुई थी। सभी ने इस कार्यक्रम की प्रशंसा की तथा मांग की गई कि प्रतिवर्ष होली के अवसर पर ऐसा कार्यक्रम अवश्य किया जावे।

इस अवसर पर आर्यसमाज इसराना जिला पानीपत के प्रधान श्री मा० सूरतसिंह आर्य, मंत्री श्री जयपाल आर्य, श्री रामपाल आर्य व उपप्रधान श्री रामचन्द्र आर्य आदि सैकड़ों की संख्या में आर्यसमाजी इस कार्यक्रम में उपस्थित हुए।

-रामचन्द्र आर्य, आर्यसमाज इसराना जिला पानीपत

आर्यसमाज बालन्द जिला रोहतक का ऋषि बोधोत्सव सम्पन्न

आर्यसमाज बालन्द जिला रोहतक में ऋषि बोधोत्सव बड़ी धूमधाम से मनाया गया। माता कृष्णा देवी आर्या ऋषि मिशन को आगे बढ़ाने में तत्पर रहती हैं और वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार के लिए जितना वह कर सकती हैं, इस महान कार्य में लगी रहती हैं। उनकी तीव्र इच्छा है कि मेरे देश में वैदिक धर्म का प्रचार-प्रसार हो और आर्यसमाज के सिद्धांतों की जय बोली जाए। उसी रास्ते पर समाज चले जैसा कि महर्षि दयानन्द सरस्वती को जो हमने वचन दिया था, वह पूरा हो। आज बोधोत्सव के अवसर पर आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा दयानन्दमठ से वेदप्रचार मंडल रोहतक से इस कार्यक्रम में भाग लिया और बहुत सुंदर शोभा यात्रा निकाली गई। मैं इस सारे सुंदर कार्यक्रम के लिए माता कृष्णा देवी जी और आर्यसमाज बालंद जिला रोहतक का आभार प्रकट करता हूं। बहन दया आर्या जी, जो सदा वेद और योग के प्रचार में लगी रहती हैं और श्री सत्यपाल 'मधुर' सभा-भजनोपदेशक जी ने बहुत सुन्दर भजनों का कार्यक्रम प्रस्तुत किया तथा अपने मधुर भजनों से सभी श्रोताओं को आत्मविभोर कर दिया। एक नया उत्साह इस गांव के आर्यसमाज में आया। गांव के बहुत आर्यों ने और माताओं ने इसमें भाग लिया। मैं इनका बहुत-बहुत धन्यवाद करता हूं।

—सुभाष सांगवान

शोक-समाचार

आर्यसमाज बीकानेर गंगायचा अहीर जिला रेवाड़ी के कर्मठ कार्यकर्त्ता प्रो० धर्मवीर नम्बरदार के भतीजे विवेक आर्य का सड़क दुर्घटना में निधन हो गया। परमपिता परमात्मा से प्रार्थना है कि दिवंगत आत्मा को सद्गति एवं व्यथित परिवार को इस दुःख को सहन करने की शक्ति प्रदान करे। **—कमलसिंह आर्य, अन्तरंग सदस्य**

आर्यसमाजों के उत्सवों की सूची

1. **आर्यसमाज इसराना जिला पानीपत** — 23-24 मार्च 20
2. **आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ़ जिला झज्जर** — 25-29 मार्च 20

—सभामन्त्री

'आर्य प्रतिनिधि' के स्वामित्व आदि का विवरण
फार्म - 4 (नियम 8 देखिए)

1.	प्रकाशन स्थान	-	दयानन्दमठ, रोहतक
2.	प्रकाशन अवधि	-	पाक्षिक
3.	मुद्रक का नाम	-	उमेद सिंह शर्मा
	क्या भारत का नागरिक है	-	हाँ
	पता	-	सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक
4.	प्रकाशक का नाम	-	उमेद सिंह शर्मा
	क्या भारत का नागरिक है	-	हाँ
	पता	-	दयानन्दमठ, रोहतक
5.	सम्पादक का नाम	-	उमेद सिंह शर्मा
	क्या भारत का नागरिक है	-	हाँ
	पता	-	सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक
6.	उन उन व्यक्तियों के नाम व पते जो समाचार पत्र के स्वामी हों तथा समस्त पूंजी के एक प्रतिशत से अधिक के हिस्सेदार हों।		आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा दयानन्दमठ, रोहतक इसके प्रकाशन का सम्पूर्ण आय-व्यय वहन करता है। अन्य कोई हिस्सेदार नहीं है।

मैं, उमेद सिंह शर्मा एतद् द्वारा घोषित करता हूं कि मेरी अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार ऊपर दिए गए विवरण सत्य हैं।

प्रकाशक के हस्ताक्षर
(उमेद सिंह शर्मा)

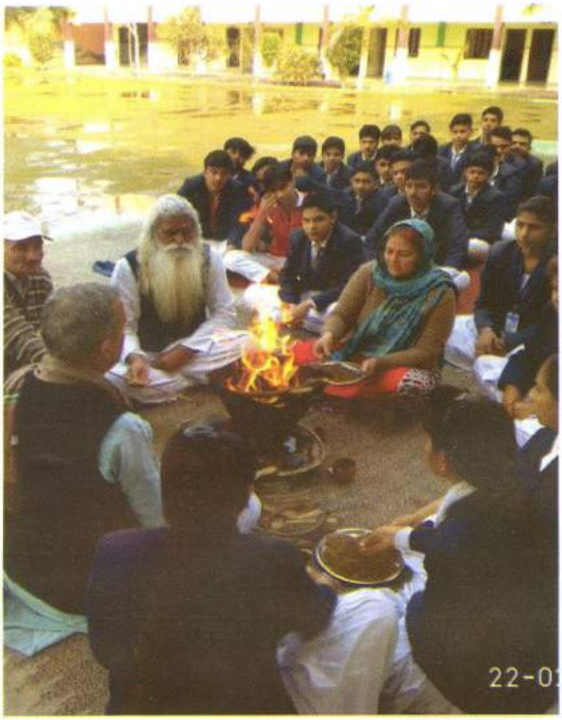

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के तत्त्वावधान में आयोजित वेद प्रचार अभियान "लौटो वेदों कि ओर" की झलकियां।

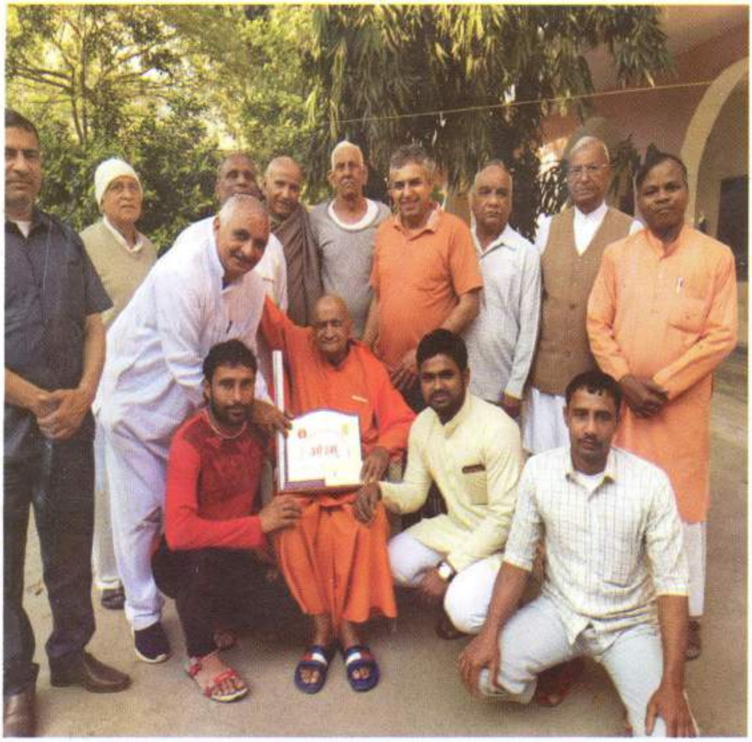

सभा प्रधान
मा० रामपाल आर्य
आत्म शुद्धि आश्रम
बहादुरगढ़ (झज्जर)
में स्वामी धर्ममुनि जी
को सम्मानित करते हुए।

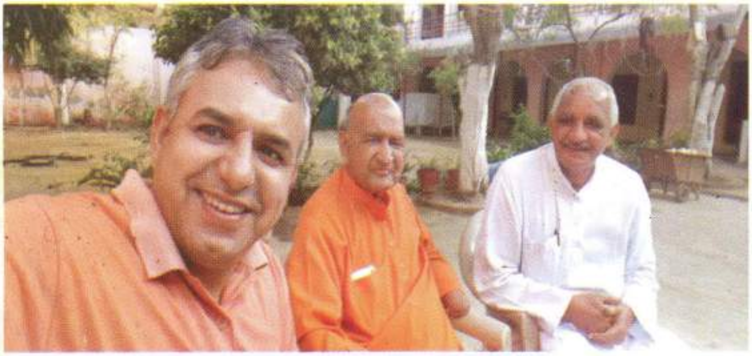

प्रेषक :
मन्त्री
आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा
दयानन्द मठ, रोहतक
हरियाणा, 124001

श्री ....
पता ....
....

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा (रजि.) के स्वामित्व में मुद्रक, प्रकाशक उमेद शर्मा ने दुर्गेश्वरी प्रिंटर्स के लिए आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक से मुद्रित एवं कार्यालय, सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ रोहतक-124001 से प्रकाशित।

- सम्पादक उमेद शर्मा